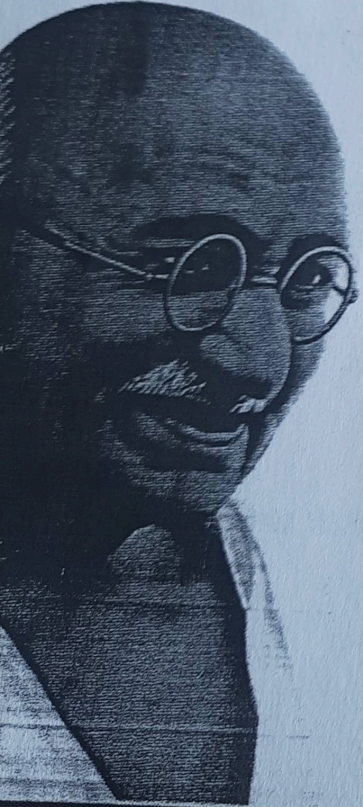


MAH/NAN/10936/2015  
ISSN : 2454-7905  
SJIF 2021 - Impact Factor: 6.91

***Worldwide International  
Inter Disciplinary Research Journal***  
(A Peer Reviewed)

Year - 7, Vol.I, Issue-XXXVII, 2 October 2021



**महात्मा गांधी  
जीवन परिचय  
कार्य आणि विचार**

Editor : Dr. Dharampurikar Bhalchandra Vaijanathrao

**Quarterly Research Journal**

ities - Social Sciences - Sports - Commerce -



ISSN: 2454 – 7905

SJIF Impact Factor: 6 . 91

# Worldwide International Inter Disciplinary Research Journal

*A Peer Reviewed Referred Journal*  
Quarterly Research Journal

(Arts-Humanities-Social Sciences- Sports, Commerce, Science, Education, Agriculture, Management, Law, Engineering,  
Medical-Ayurveda, Pharmaceutical, MSW, Journalism, Mass Communication, Library sci., Faculty's)

[www.wiildrj.com](http://www.wiildrj.com)

Vol. I

ISSUE - XXXVII

Year – 7

2 Oct. 2021

विशेषअंक

## महात्मा गांधी जीवन परिचय कार्य आणि विचार

Special Issue  
Editor by

**Dr. Dharampurikar Bhalchandra Vaijanathrao**

Dept. of Political Science

N. S. B. College, Nanded.

**Editor in Chief : Mrs. Pallavi Laxman Shete**

Principal, Sanskriti Public School, Nanded. (MH. India) Email: [Shrishprakashan2009@gmail.com](mailto:Shrishprakashan2009@gmail.com)

**Director : Mr. Tejas Rampurkar**

(For International contact only +91-8857894082)

**Address for Correspondence** : House No.624 - Belanagar, Near Maruti Temple, Taroda

(KH), Nanded – 431605 (India -Maharashtra) Email: [Shrishprakashan2009@gmail.com](mailto:Shrishprakashan2009@gmail.com)

[umbarkar.rajesh@yahoo.com](mailto:umbarkar.rajesh@yahoo.com) Mob. No: +91-9623979067 Website: [www.wiildrj.com](http://www.wiildrj.com)



# INDEX

| Sr. No. | Title of the Paper                                                            | Name of Author                                              | Page No. |
|---------|-------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------|----------|
| 01.     | PRINCIPLES OF MAHATMA GANDHI                                                  | Dr. Arun Mahadco Rakh                                       | 01       |
| 02.     | MAHATMA GANDHI AND HIS VISION OF IDEAL SOCIETY                                | Dr. Tulshiram Laxman Dabde<br>Dr. Manoj Chandrashekhar Zade | 04       |
| 03.     | महात्मा गाँधी जी के विचार में सामाजिक समानता                                  | डॉ. शेख बेनज़ीर                                             | 12       |
| 04.     | राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानवतावादी दृष्टिकोण                             | डॉ. अलका पांडेय                                             | 15       |
| 05.     | वर्तमान युग में गांधीवाद की जरूरतों की आवश्यकता<br>भारतीय संस्कृति : समाजनीति | प्रोफेसर एवं डॉ. रोहताश जमदग्नि                             | 18       |
| 06.     | महात्मा गांधीजी के सामाजिक विचार                                              | Dr. Shilpa Shah                                             | 21       |
| 07.     | मं. गांधी का सामाजिक कार्यों में योगदान                                       | डॉ. चौधरी जे. ए.                                            | 24       |
| 08.     | महात्मा गांधीजी के ग्रामस्वराज्य संबंधी विचार : तुलनात्मक व टीकात्मक          | प्रा. डॉ. बनसोडे विलास भारतराव                              | 26       |
| 09.     | महात्मा गांधीजी अहिंसावादाची प्रासंगिकता व आजचे जग                            | डॉ. डी. डी. कोल्हेकर                                        | 29       |
| 10.     | महात्मा गांधीजीचे सत्य व अहिंसा विषयक विचार आणि कार्यपद्धती- एक अभ्यास        | प्रा. प्रदीप नामदेव तायडे                                   | 32       |
| 11.     | २१ व्या शतकातील महात्मा गांधीजीच्या विचारांची प्रासंगिकता                     | प्रा. डॉ. मलदोडे साहेबराव रामराव                            | 37       |
| 12.     | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार                                              | प्रा. डॉ. विजयकुमार सोनी                                    | 40       |
| 13.     | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार : एक आकलन                                    | प्रा. डॉ. प्रकाश जंगले                                      | 46       |
| 14.     | महात्मा गांधीजींचे शेतीविषयक विचार                                            | प्रा. रमेश शंकर माने                                        | 49       |
| 15.     | "महात्मा गांधींचे स्त्री शिक्षण विषयक विचार"                                  | प्रा. कल्याण राजेंद्र वटाणे.                                | 55       |
| 16.     | वर्तमानकाळात महात्मा गांधींच्या आर्थिक विचारांची गरज                          | डॉ. कल्पना भजनी<br>डॉ. कांचनमाला क्षीरसागर                  | 57       |
| 17.     | मा. गांधी यांच्या आर्थिक विचारांची सार्थकता : एक अभ्यास                       | प्रा. डॉ. एस. एल. मेढे                                      | 60       |
| 18.     | महात्मा गांधी यांचे राजकीय विचारांची प्रासंगिकता                              | डॉ. दत्तात्रय मारुती काळे                                   | 63       |
| 19.     | महात्मा गांधी : राजकीय नेतृत्व                                                | प्रा. डॉ. विनोद जीवनतारे                                    | 67       |
| 20.     | म. गांधीजींची सत्याग्रहाची मुलतत्वे                                           | प्रा. डॉ. भिमराव प्रल्हाद उबाळे                             | 71       |
| 21.     | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार                                              | डॉ. राजेश्री अ. जाधव                                        | 74       |
| 22.     | लोकशाहीत महात्मा गांधींच्या नैतिक विचारांची प्रासंगिकता                       | श्री. हर्ष अरुण नेतकर                                       | 77       |
| 23.     | जैविक वाढिबाबत (स्वयंपूर्णता) महात्मा गांधीजींचे विचार                        | डॉ. रवींद्र बापुराव शेंडे                                   | 81       |
| 24.     | 'महात्मा गांधींचे आर्थिक विचार'                                               | प्रतिमा दादाराव वाढवे                                       | 84       |



# INDEX

| Sr. No. | Title of the Paper                                                            | Name of Author                                              | Page No. |
|---------|-------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------|----------|
| 01.     | PRINCIPLES OF MAHATMA GANDHI                                                  | Dr. Arun Mahadeo Rakh                                       | 01       |
| 02.     | MAHATMA GANDHI AND HIS VISION OF IDEAL SOCIETY                                | Dr. Tulshiram Laxman Dabde<br>Dr. Manoj Chandrashekhar Zade | 04       |
| 03.     | महात्मा गाँधी जी के विचार में सामाजिक समानता                                  | डॉ. शेख बेनज़ीर                                             | 12       |
| 04.     | राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानवतावादी दृष्टिकोण                             | डॉ. अलका पांडेय                                             | 15       |
| 05.     | वर्तमान युग में गांधीवाद की जरूरतों की आवश्यकता<br>भारतीय संस्कृति : समाजनीति | प्रोफेसर एवं डॉ. रोहताश जमदग्नि                             | 18       |
| 06.     | महात्मा गांधीजी के सामाजिक विचार                                              | Dr. Shilpa Shah                                             | 21       |
| 07.     | मं. गांधी का सामाजिक कार्यों में योगदान                                       | डॉ. चौधरी जे. ए.                                            | 24       |
| 08.     | महात्मा गांधीजीके ग्रामस्वराज्य संबंधी के विचार :<br>तुलनात्मक व टीकात्मक     | प्रा. डॉ. बनसोडे विलास भारतराव                              | 26       |
| 09.     | महात्मा गांधीच्या अहिंसावादाची प्रासंगिकता व आजचे जग                          | डॉ. डी. डी. कोल्हेकर                                        | 29       |
| 10.     | महात्मा गांधीजीके सत्य व अहिंसा विषयक विचार<br>आणि कार्यपद्धती- एक अभ्यास     | प्रा. प्रदीप नामदेव तायडे                                   | 32       |
| 11.     | २१ व्या शतकातील महात्मा गांधीजीच्या विचारांची प्रासंगिकता                     | प्रा. डॉ. मलदोडे साहेबराव रामराव                            | 37       |
| 12.     | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार                                              | प्रा. डॉ. विजयकुमार सोनी                                    | 40       |
| 13.     | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार : एक आकलन                                    | प्रा. डॉ. प्रकाश जंगले                                      | 46       |
| 14.     | महात्मा गांधीजीके शेतीविषयक विचार                                             | प्रा. रमेश शंकर माने                                        | 49       |
| 15.     | "महात्मा गांधीके स्त्री शिक्षण विषयक विचार"                                   | प्रा. कल्याण राजेंद्र वटाणे.                                | 55       |
| 16.     | वर्तमानकाळात महात्मा गांधीच्या आर्थिक विचारांची गरज                           | डॉ. कल्पना भजनी<br>डॉ. कांचनमाला क्षीरसागर                  | 57       |
| 17.     | मा. गांधी यांच्या आर्थिक विचारांची सार्थकता : एक अभ्यास                       | प्रा. डॉ. एस. एल. मेढे                                      | 60       |
| 18.     | महात्मा गांधी यांचे राजकीय विचाराची प्रासंगिकता                               | डॉ. दत्तात्रय मारुती काळे                                   | 63       |
| 19.     | महात्मा गांधी : राजकीय नेतृत्व                                                | प्रा. डॉ. विनोद जीवनतारे                                    | 67       |
| 20.     | म. गांधीजीची सत्याग्रहाची मुलतत्वे                                            | प्रा. डॉ. भिमराव प्रल्हाद उबाळे                             | 71       |
| 21.     | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार                                              | डॉ. राजेश्री अ. जाधव                                        | 74       |
| 22.     | लोकशाहीत महात्मा गांधीच्या नैतिक विचारांची प्रासंगिकता                        | श्री. हर्ष अरुण नेतकर                                       | 77       |
| 23.     | जैविक वाढिबाबत (स्वयंपूर्णता) महात्मा गांधीजीके विचार                         | डॉ. रवींद्र बापुराव शेंडे                                   | 81       |
| 24.     | "महात्मा गांधीके आर्थिक विचार"                                                | प्रतिमा दादाराव वाढवे                                       | 84       |



*(continued)*

1. The first part of the document discusses the importance of maintaining accurate records of all transactions and the role of the accounting department in ensuring the integrity of the financial statements.

*[The page contains dense handwritten text in cursive script, which is mostly illegible due to blurring.]*

[illegible][illegible][illegible]

॥०॥  
 श्रीगणेशाय नमः, "सत्यमेव जयते" इति वाक्यं अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं अस्ति।  
 सत्यमेव जयते इति वाक्यं अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं अस्ति।  
 सत्यमेव जयते इति वाक्यं अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं अस्ति।

[illegible][illegible]



# म. गांधीजींची सत्याग्रहाची मुलतत्वे

प्रा. डॉ. भिमराव प्रल्हाद उवाळे

समाजशास्त्र विभाग, संत भगवान बाबा कला महाविद्यालय, शिंदखेड राजा जि. बुलडाणा

## प्रस्तावना:

सत्याग्रह हि म.गांधीजींच्या तत्त्वज्ञानातील एक प्रमुख व महत्त्वाची संकल्पना आहे. त्यांनी सत्याला अंतिम वास्तव मानले होते. अहिंसेच्या मार्गाचा अवलंब करून सत्याग्रहाप्रत पोहचण्याचा मानवाने सतत प्रयत्न केला पाहिजे असे प्रतिपादन केले आहे. त्याच बरोबर सत्याग्रहा पर्यंत जाण्यासाठी किंच्या सत्याचा शोध घेण्यासाठी प्रयत्नांशिल असलेल्या व्यक्तीने मनोनिग्रह व आत्मबल प्रकट करणे आवश्यक असते. कारण अहिंसेच्या मार्गाने सत्याचा शोध घेतांना अन्याय, जुलूम, जबरदस्ती, अत्याचार, असत्य यांच्या विरुद्ध लढा देण्यासाठी गरज निर्माण होते ती सत्याग्रहाची.

अशा परिस्थितीत मनोनिग्रह व आत्मबल यांच्या आधारावर भावी चाट्याल करणे शक्य असते. तेव्हा आपले अंतिम उद्दिष्ट साध्य करण्यासाठी मनोनिग्रह व आत्मबलाच्या साहाय्याने मार्गातील अडथळ्यांशी केलेला मुकाबला म्हणजे सत्याग्रह होय. सत्याग्रहाचा अर्थ स्पष्ट करतांना म.गांधी यांनी असे म्हटले आहे की, "शुद्ध आत्मीक शक्तीचा अन्याय, दडपशही व शोषण या विरुद्ध केलेला वापर म्हणजे सत्याग्रह होय." यावरून हे स्पष्ट होते की, म.गांधीजींनी सत्याग्रहाला नैतिक साधन मानले होते. म.गांधीजींच्या सर्वच विचारांना अध्यात्मिक अधिष्ठान असून सत्याग्रहाची संकल्पना ही त्याला अपवाद नाही.

## सत्याग्रहाचा अर्थ :-

सत्याग्रह हा संस्कृत शब्द आहे. हा शब्द सत्य आणि आग्रह या दोन शब्दापासून बनला आहे. सत्याग्रह शब्दाचा अर्थ सत्या करीता केलेला आग्रह असा होतो. म्हणजेच यामध्ये मुख्य भर सत्यावर आहे. म.गांधीजींनी सत्याला चिटकून राहणे म्हणजे सत्याग्रह अशी सत्याग्रहाची व्याख्या सांगितली आहे. सत्याच्या प्राप्ती करीता आग्रही राहून प्रयत्न करावयाचा ही यामधील महत्त्वाची गोष्ट आहे. म.गांधीजींच्या सत्याग्रहाची संकल्पना म्हणजे समाज, राजकिय विचार व व्यवहार यांचा अपूर्व संगम होय. वास्तविक सत्याग्रहाची संकल्पना जुनीच आहे. परंतु म.गांधीजींनी सत्याग्रहाला राजकिय, सामाजिक व भौतिक स्वरूप प्राप्त करून दिले.

## सत्याग्रहाची मुलतत्वे :-

म. गांधीजींनी सत्याग्रहाची काही मुलतत्वे सांगितली आहेत ती अशी

### हृदय परिवर्तन :

सत्याग्रहाचे महत्त्वाचे मुलतत्व म्हणजे सत्याग्रहाच्या आधारे व्यक्तीचे हृदय परिवर्तन करता येते. त्यासाठी सत्याग्रह करणाऱ्या व्यक्तीने स्वतः क्लेश सहन करून दुसऱ्याच्या वाईट वृत्तीमध्ये परिवर्तन घडवून आणले पाहिजे. परंतु दुसऱ्या व्यक्तीस क्लेश मात्र देवू नये.

### अहिंसेचा मार्ग :

म.गांधीजींच्या मते, "सत्याग्रहाच्या बाबतीत अहिंसेच्या मार्गाचा स्विकार करण्यात आला पाहिजे हिंसेच्या मार्गाचा वापर करण्यात आला तर अशा वेळी मात्र सत्याग्रहाची मुळ भुमिका टिकाव धरू शकणार नाही. म्हणून अहिंसेचा मार्ग हा सत्याग्रहाच्या बाबतीत महत्त्वाचा ठरतो.

### बल प्रयोग :

बल म्हणजे शक्ती, ताकद बलाच्या आधारे कोणत्याही व्यक्तीचे मन परिवर्तन करणे शक्य नसते. असे म.गांधीजींचे मत होते. मन किंच्या मत परिवर्तन करण्यास बलप्रयोगाचा वापर केला तर सत्याग्रहाचे मुळे तत्व कमी पडत आहे. त्याचा शोषणास विसर पडत आहे. त्याची जाणीव सत्याग्रहींना असली पाहिजे.

### कृतीचा मार्ग :

म. गांधीजी म्हणतात, सत्याग्रह हा कृतीचा मार्ग असल्यामुळे त्या मार्गाचा वापर हा प्रत्येक व्यक्तीने केला पाहिजे. त्यावेळी सर्व प्रकारच्या मार्गांचा अवलंब करणे संपते त्याच वेळी या मार्गाचा अवलंब करण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. सत्याग्रह आदर्शवादा बरोबरच प्रत्यक्षात अमलबजावणी करण्याची संकल्पनाच आहे.



**नैतिक शास्त्र :**

पूर्वाच्या काळी सत्याग्रह हा एक प्रकारचा समाजिक मार्ग मानला जात होता. परंतु म. गांधीजींनी मात्र त्याला नैतिक शास्त्र मानले. त्याच प्रमाणे सत्याग्रहाचा वापर राजकीय व सामाजिक क्षेत्रात देखिल केला पाहिजे. व्यक्तीच्या भावनात्मक स्वरूपाच्या हृदय परिवर्तन करण्याची प्रक्रिया देखिल सत्याग्रहात अपेक्षित असते.

**आत्मीक बल :**

सत्याग्रहाचा लढा हा मुलतः आत्मीक बलावर लढण्याचा मार्ग आहे. या लढ्यात इतर कोणत्याही सामर्थ्य व शक्तीसाधना पेक्षा आत्मबलास अनन्य साधारण असे महत्त्व म.गांधीजींनी दिले आहे.

**कठीण अशी साधना :**

सत्याग्रहाचा पुरस्कार करणाऱ्यांना कठीण व खडतर अशी साधना करणे महत्त्वाचे आहे. अशी म. गांधीजींची ठाम भुमिका होती. कारण सत्याग्रह ही साधी व सोपी अशी बाब नाही. बौद्धिक स्वरूपाची उंची सत्याग्रहासाठी आवश्यक आहे. त्यामुळे सत्याग्रहींना अनेक बाबतीत खडतर अशी तपश्चर्या करावी लागते.

**समाजहित :**

म. गांधीजी म्हणतात, व्यक्तीगत कारणासाठी सत्याग्रह करण्याचा कुणीही प्रयत्न करू नये. कारण सत्याग्रह हा केवळ समाजहिताच्या दृष्टीनेच करावा लागतो. व्यापक समाजहित व समाजकल्याण हि त्यामागची भावना असते. कोणताही सत्याग्रह नैतिक तत्त्वावर आधारित असला पाहिजे. सामाजिक मुल्यांची जोपासना करूनच सत्याग्रह केला पाहिजे.

**त्यागी भुमिका :**

ज्या व्यक्तींची त्यागी भुमिका असते त्यांनीच सत्याग्रहाचे कार्य करण्यासाठी प्रयत्न करावेत. कारण स्वार्थी वृत्तीने कुणी सत्याग्रह करण्याचा प्रयत्न केला तर त्यास काही अर्थ उरणार नाही. म्हणून सत्याग्रहासाठी त्यागी व्यक्तींची खुप आवश्यकता म.गांधीजींनी प्रतिपादन केली आहे.

**सत्याग्रहाची साधने :-****असहकार :**

असहकार हे सत्याग्रहाचे एक महत्त्वपूर्ण साधन आहे. भारतीय स्वातंत्र्याच्या आंदोलनात इ.स. १९२० मध्ये म.गांधीजींनी असहकाराच्या मार्गाचा अवलंब केला होता. असहकार चळवळी मागील म. गांधीजींची अशी भुमिका होती की, कोणतीही शासन व्यवस्था जनतेच्या सहकार्यावर व पाठिंब्यावरच राज्य कारभार चालू शकते. परंतु जेव्हा एखादे शासन लोकहिताकडे दुर्लक्ष करून अन्यायाने राज्य करू लागते, तेव्हा त्या शासनाशी सहकार्य न करणे हे देखिल जनतेचे कर्तव्य ठरते.

म. गांधीजींच्या मते, जेव्हा एखादे सरकार जुलमी बनते तेव्हा त्यांचा जुलूम जनतेच्या मुक संमतीमुळेच चालत असतो. इ.स.१९२० च्या असहकाराच्या चळवळीत म.गांधीजींनी भारतीय जनतेला कार्यक्रम दिला. ज्यात सरकारी कार्यालय व न्यायालय यांच्या कामकाजात भाग न घेणे, सरकारी शाळा व महाविद्यालये यावर बहिष्कार टाकणे, परकिय मालावर बहिष्कार घेणे, सरकारी नोकऱ्यांचा त्याग करणे, सरकारी कर भरण्यास नकार देणे, कायदे मंडळाच्या निवडणुकीत भाग न घेणे. या सारख्या अनेक बाबींचा या असहकार आंदोलनात समावेश होता.

**सविनय कायदेभंग :**

१९२० साली लाहोर येथे भरलेल्या काँग्रेस अधिवेशनात संपूर्ण स्वराज्य प्राप्तीचे ध्येय घोषित करण्यात आले होते. आणि त्यासाठी सविनय कायदेभंगाची चळवळ सुरू करण्याचा निर्धार व्यक्त करण्यात आला. १९३० साली प्रसिध्द दांडी यात्रा आंदोलनाने सविनय कायदेभंग चळवळीचा प्रारंभ करण्यात आला.

'सविनय कायदेभंग हा अन्याया विरुद्धच्या लढ्यातील असहकाराच्या पुढील टप्पा मानता येईल. म.गांधीजींच्या मतानुसार सरकारच्या अन्यायी कायद्यांना विरोध करण्यासाठी सविनय कायदेभंगाच्या मार्गाचा अवलंब करावयाचा असतो. असा कायदेभंग करणाऱ्या सत्याग्रहीला राज्याच्या कायद्या बद्दल आदरच असतो.

म.गांधीजींनी इ.स.१९३० मध्ये आपल्या देशाला सविनय कायदेभंगाची चळवळ सुरू केली. या कायदेभंगात मिठाचा सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह इ.कार्यक्रम हाती घेतले होते. इंग्रज सरकारने मिठासारख्या सर्वांच्या गरजेच्या वस्तुवर कर बसविला होता. हा कर अन्यायी व जुलमी आहे असे म. गांधीजींचे मत होते. म्हणून त्यांनी मिठाचा सत्याग्रह केला.



## हिजरत :

सत्याग्रहीने वापरावयाचे हिजरत हे एक अतिशय महत्त्वाचे साधन आहे. हिजरत चा अर्थ आपला कायम वास्तव्याचा प्रदेश सोडून दुसऱ्या प्रदेशात निघून जाणे. म.गांधीजींनी सत्याग्रहाचा एक मार्ग म्हणून हिजरत चा पुरस्कार केला होता. म.गांधीजींनी १९३० मध्ये गुजरात मधील बारडोली येथील जनतेला आणि इ.स.१९३९ मध्ये जुनागड, विदुलगड व तिवडी येथील जनतेला हिजरतचा सल्ला दिला होता.

## उपोषण :

उपोषण हा नविन सत्याग्रहाचा मार्ग होय. अन्यायाचा प्रतिकार करण्याचा एक प्रभावी उपाय म्हणून म.गांधी उपोषणाकडे बघत असत. उपोषणाचा अवलंब आत्मशुद्धीसाठी तसेच इतरांचे मत परिवर्तनासाठी तसेच विरोधकांच्या मनातील स्वतंत्र वृत्ती जागृत करून त्याला अयोग्य मार्गापासून प्रवृत्त करण्यासाठी केला जात असे. स्वार्थी वृत्तीने उपोषणाच्या मार्गाचा अवलंब केला जावू नये असे म.गांधीजींचे मत होते.

## हरताळ :

हरताळ याचा अर्थ आपले नेहमीचे कामकाज पूर्णपणे बंद करणे होय. हरताळामुळे सरकार व सर्वसामान्य जनता या दोन्ही घटकांचे लक्ष अन्याय, अत्याचाराकडे वेधून घेता येते. लोकांना ही आपल्यावरील अन्याय अत्याचाराची जाणीव होते. यामधून लोक जागृती होवून सरकारला आपल्या धोरणात फेरविचार करण्यास भाग पाडले जाते.

हरताळ हा देखिल अहिंसक पद्धतीने अन्यायाचा प्रतिकार करण्याचा मार्ग आहे. म्हणून हरताळ हे साधन पूर्णपणे नैतिक स्वरूपाचे आहे. तसेच हरताळ हा ऐच्छिक व स्वयंस्फूर्त असावा.

## संप :

सत्याग्रहाचे साधन म्हणून म.गांधीजींनी संपाचा पुरस्कार केला आहे. संपाचा अवलंब कामगार वर्गाने आपणावर होणाऱ्या अन्यायाचे निवारण करण्यासाठी करावयाचा आहे. म.गांधीजींच्या मतानुसार संप हा देखिल हृदय परिवर्तनाचा मार्ग आहे. कामगारांनी आपले काम बंद करून स्वतः आत्मक्लेश सहन करावा. आणि भांडवलदारांना त्यांची चुक दुरुस्त करण्यास भाग पाडावे. असे म.गांधीजींचे मत होते.

## धरणे / निरोधन :

धरणे किंवा निरोधन म्हणजे एखाद्या व्यक्तीच्या किंवा समुहाच्या विशिष्ट कृतीला आपला विरोध दर्शविण्यासाठी सामूहिकपणे प्रयत्न करून त्या व्यक्तींना किंवा समुहाला ती कृति करण्यापासून परावृत्त करणे होय. स्वातंत्र्यपूर्व काळात काँग्रेसचे कार्यकर्ते व म.गांधीजींचे अनुयायी परदेशी मालाची विक्री करणारे दुकाने, दारुची दुकाने या सारख्या अनेक ठिकाणी धरणे धरून आपला विरोध प्रकट करीत असत.

## सामाजिक बहिष्कार :

सामाजिक बहिष्कार या मार्गाचा विशिष्ट अशा परिस्थितीत अवलंब करता आला पाहिजे. सामाजिक बहिष्काराचा सातत्याने वापर करणे योग्य नसते. जेव्हा काही लोक स्वतःचा स्वार्थ साधण्यासाठी समाजाच्या फायद्यासाठी, लोककल्याणासाठी चालविलेल्या चळवळीला विरोध करतात. तेव्हा त्यांच्यावर बहिष्कार टाकलाच पाहिजे. असे म.गांधीजी म्हणतात.

म.गांधीजींनी देशाच्या व समाजाच्या कल्याणासाठी अनेक सत्याग्रह व आंदोलने केली. देशाची अखंडता व जनकल्याण हे ध्येय साध्य करण्यासाठी सतत ते कार्यरत होते. हे सर्व साध्य करण्यासाठी त्यांनी बलाढ्य इंग्रज शासना समोर सत्याग्रहाचे हत्यार उपसून त्यांना जेरीस आणले. सत्याग्रह हा म.गांधीजींचा अविभाज्य भाग बनला होता. आपल्या संपूर्ण आयुष्यात त्यांनी अनेक सत्याग्रह केले. हे सर्व अभ्यासकांना ज्ञातच आहे.

## संदर्भ ग्रंथ :-

१. महात्मा गांधी - नलिनी पंडीत.
२. महात्मा गांधी - रमेश मुधोळकर.
३. माझे सत्याचे प्रयोग - महात्मा गांधी.



### हिजरत :

सत्याग्रहीने चापरावयाचे हिजरत हे एक अतिशय महत्वाचे साधन आहे. हिजरत चा ३ प्रदेश सोडून दुसऱ्या प्रदेशात निघून जाणे. म.गांधीजींनी सत्याग्रहाचा एक मार्ग म्हणून हिज म.गांधीजींनी १९३० मध्ये गुजरात मधील बारडोली येथील जनतेला आणि इ.स.१९३१ मध्ये जुनाग जनतेला हिजरतचा सल्ला दिला होता.

### उपोषण :

उपोषण हा नविन सत्याग्रहाचा मार्ग होय. अन्यायाचा प्रतिकार करण्याचा एक प्र उपोषणाकडे बघत असात. उपोषणाचा अवलंब आत्मशुद्धीसाठी तसेच इतरांचे मत परिवर्तनासाठी स्वतंत्र वृत्ती जागृत करून त्याला अयोग्य मार्गापासून प्रवृत्त करण्यासाठी केला जात असे. स्वातंत्र्य अवलंब केला जावू नये असे म.गांधीजींचे मत होते.

### हरताळ :

हरताळ याचा अर्थ आपले नेहमीचे कामकाज पूर्णपणे बंद करणे होय. हरताळामुळे सरा दोन्ही घटकांचे लक्ष अन्याय, अत्याचाराकडे वेधून घेता येते. लोकांना ही आपल्यावरील अन्याय यामधून लोक जागृती होवून सरकारला आपल्या धोरणात फेरविचार करण्यास भाग पाडले जाते.

हरताळ हा देखिल अहिंसक पद्धतीने अन्यायाचा प्रतिकार करण्याचा मार्ग आहे. म्हणून नैतिक स्वरूपाचे आहे. तसेच हरताळ हा ऐच्छिक व स्वयंस्फुर्त असावा.

### संप :

सत्याग्रहाचे साधन म्हणून म.गांधींनी संपाचा पुरस्कार केला आहे. संपाचा अवलंब कामगा अन्यायाचे निवारण करण्यासाठी करावयाचा आहे. म.गांधीजींच्या मतानुसार संप हा देखिल हा कामगारांनी आपले काम बंद करून स्वतः आत्मक्लेश सहन करावा. आणि भांडवलदारांना त्यांची पाडावे. असे म.गांधीजींचे मत होते.

### धरणे / निरोधन :

धरणे किंवा निरोधन म्हणजे एखाद्या व्यक्तीच्या किंवा समुहाच्या विशिष्ट कृतीला आ सामुहिकपणे प्रयत्न करून त्या व्यक्तींना किंवा समुहाला ती कृति करण्यापासून परावृत्त करणे काँग्रेसचे कार्यकर्ते व म.गांधीजींचे अनुयायी परदेशी मालाची विक्री करणारे दुकाने, दारुची दुकाने धरणे धरून आपला विरोध प्रकट करीत असत.

### सामाजिक बहिष्कार :

सामाजिक बहिष्कार या मार्गाचा विशिष्ट अशा परिस्थितीत अवलंब करता आला पाहिजे सातत्याने वापर करणे योग्य नसते. जेव्हा काही लोक स्वतःचा स्वार्थ साधण्यासाठी समाजाच्या फायद्याला चालविलेल्या चळवळीला विरोध करतात. तेव्हा त्यांच्यावर बहिष्कार टाकलाच पाहिजे. असे म.गांधीजींनी देशाच्या व समाजाच्या कल्याणासाठी अनेक सत्याग्रह व आंदोलने व जनकल्याण हे ध्येय साध्य करण्यासाठी सतत ते कार्यरत होते. हे सर्व साध्य करण्यासाठी त्यांनी सत्याग्रहाचे हत्यार उपसून त्यांना जेरीस आणले. सत्याग्रह हा म.गांधीजींचा अविभाज्य भाग व आयुष्यात त्यांनी अनेक सत्याग्रह केले. हे सर्व अभ्यासकांना ज्ञातच आहे.

### संदर्भ ग्रंथ :-

१. महात्मा गांधी - नलिनी पंडीत.
२. महात्मा गांधी - रमेश मुधोळकर.
३. माझे सत्याचे प्रयोग - महात्मा गांधी.



**हिजरत :**

सत्याग्रहीने वापरावयाचे हिजरत हे एक अतिशय महत्त्वाचे साधन आहे. हिजरत चा अर्थ आपला कायम वास्तव्याचा प्रदेश सोडून दुसऱ्या प्रदेशात निघून जाणे. म.गांधीजींनी सत्याग्रहाचा एक मार्ग म्हणून हिजरत चा पुरस्कार केला होता. म.गांधीजींनी १९३० मध्ये गुजरात मधील बारडोली येथील जनतेला आणि इ.स.१९३९ मध्ये जुनागड, विदुलगड व तिवडी येथील जनतेला हिजरतचा सल्ला दिला होता.

**उपोषण :**

उपोषण हा नविन सत्याग्रहाचा मार्ग होय. अन्यायाचा प्रतिकार करण्याचा एक प्रभावी उपाय म्हणून म.गांधी उपोषणाकडे बघत असत. उपोषणाचा अवलंब आत्मशुद्धीसाठी तसेच इतरांचे मत परिवर्तनासाठी तसेच विरोधकांच्या मनातील स्वतंत्र वृत्ती जागृत करून त्याला अयोग्य मार्गापासून प्रवृत्त करण्यासाठी केला जात असे. स्याथी वृत्तीने उपोषणाच्या मार्गाचा अवलंब केला जावू नये असे म.गांधीजींचे मत होते.

**हरताळ :**

हरताळ याचा अर्थ आपले नेहमीचे कामकाज पूर्णपणे बंद करणे होय. हरताळामुळे सरकार व सर्वसामान्य जनता या दोन्ही घटकांचे लक्ष अन्याय, अत्याचाराकडे वेधून घेता येते. लोकांना ही आपल्यावरील अन्याय अत्याचाराची जाणीव होते. जमघून लोक जागृती होवून सरकारला आपल्या धोरणात फेरविचार करण्यास भाग पाडले जाते.

हरताळ हा देखिल अहिंसक पध्तीने अन्यायाचा प्रतिकार करण्याचा मार्ग आहे. म्हणून हरताळ हे साधन पूर्णपणे नैतिक स्वरूपाचे आहे. तसेच हरताळ हा ऐच्छिक व स्वयंस्फूर्त असावा.

**संप :**

सत्याग्रहाचे साधन म्हणून म.गांधींनी संपाचा पुरस्कार केला आहे. संपाचा अवलंब कामगार वर्गांनी आपणावर होणाऱ्या अन्यायाचे निव्वरण करण्यासाठी करावयाचा आहे. म.गांधीजींच्या मतानुसार संप हा देखिल हृदय परिवर्तनाचा मार्ग आहे. कामगारांनी संपले काम बंद करून स्वतः आत्मकरोरा सहन करावा. आणि भांडवलदारांना त्यांची दूक दुरुस्त करण्यास भाग पाडवे. ससे म.गांधीजींचे मत होते.

**धरमे / निरोधन :**

धरमे किंवा निरोधन म्हणजे एखाद्या व्यक्तीच्या किंवा समूहाच्या विशिष्ट कृतीला आपला विरोध दर्शविण्यासाठी सान्त्विकपणे प्रयत्न करून त्या व्यक्तीला किंवा समूहाला ती कृती करण्यापासून परावृत्त करणे होय. स्वयंस्फूर्त काळाने कोणत्याही कार्यकर्त्या व म.गांधीजींचे अनुयायी परदेशी मालाची विक्री करणारे दुकाने, दारुची दुकाने या सारख्या अनेक ठिकाणी धरमे घेऊन आपला विरोध प्रकट करतात असत.

**सामाजिक बहिष्कार :**

सामाजिक बहिष्कार वा मनाचा विशिष्ट अंगा परिस्थितीत अकलंब करता आला पाहिजे. सामाजिक बहिष्काराचा स्ततयने वापर करणे योग्य नसते. जेव्हा काही लोक स्वतःचा स्वार्थ साधण्यासाठी समाजाच्या फायद्यासाठी, लोककल्याणासाठी घिलविलेल्या चतवर्तीला विरोध करतात. तेव्हा त्यांच्यावर बहिष्कार टाकलाच पाहिजे. असे म.गांधीजी म्हणतात.

म.गांधीजींनी देशाच्या व समाजाच्या कल्याणासाठी अनेक सत्याग्रह व आंदोलने केले. देशाची अखंडता व लोककल्याण हे ध्येय साध्य करण्यासाठी स्तत ते कार्यरत होते. हे सर्व साध्य करण्यासाठी त्यांनी बलाढ्य इंग्रज शासना खरी सत्याग्रहाचे हत्यार ठरवून त्यांना जेरीस आणले. सत्याग्रह हा म.गांधीजींचा अविनाश्य भाग बनला होता. आपल्या संकल्प बांधण्यात त्यांनी अनेक सत्याग्रह केले. हे सर्व अभ्यासकांना जातच आहे.

**संदर्भ ग्रंथ :-**

१. महात्मा गांधी - नॉर्लन फंडात.
२. महात्मा गांधी - तम्रेश मुधोळकर.
३. माझे सत्याग्रह प्रयोग - महात्मा गांधी.